

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.

UP HIN/2002/7589

पोस्टल रजि. सं.

U.P./MBD-64/2013-16

दयानन्दाब्द १९९,

सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वर्ष-14 / अंक- 15 / कार्तिक शु. 5 से मार्गशीर्ष कृ. 5 सं. २०७२ वि. 16-30 नवम्बर 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / मूल्य- 5/-

गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ का दीक्षांत समारोह सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
नजीबाबाद।

प्रियंवदा वेदभारती ने दीक्षांत भाषण पढ़ा।

गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ का द्वितीय दीक्षांत समारोह सोल्लास सम्पन्न हो गया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री, प्रो० भारतभूषण, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा ब्रह्मचारिणियों को आशीर्वाद प्रदान किया गया।

30 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक चले इस समारोह का आरम्भ यज्ञ एवं दीक्षांत उपदेश से हुआ, जिसमें डॉ० वेदप्रकाश, प्रो० भारत भूषण तथा प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु के प्रेरक प्रवचन हुए तथा संस्कृत, वेद एवं गुरुकुल प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डाला गया। गुरुकुल की आचार्या डॉ०

उत्सव में अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया। बलिदानी इतिहास सम्मेलन में छात्राओं ने महाशय कृष्णवीर चिरंजीलाल, पं० रुचिराम, पं० शांतिप्रकाश, स्वामी स्वतंत्रानन्द, लाला देवराज आदि की जीवन झांकी एवं बलिदान की गाथा प्रस्तुत की।

योग सम्मेलन में विद्वानों के अतिरिक्त चौदह छात्राओं द्वारा यम तथा नियमों का विषय विवेचन किया गया। दो संस्कृत नाटिकाओं शिवराज विजय तथा यक्ष युधिष्ठिर संवाद नाटिकाओं का मंचन किया गया, जिसकी दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। विद्यालय में बालिकाओं को आत्मरक्षा की विद्या ताइक्वांडो



गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद के दीक्षांत समारोह में मंच का दृश्य- केसरी।

सिखाई जाती है। इस विद्यालय की तृतीय स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। इस छात्राएं अनेक बार राष्ट्रीय स्तर की अवसर पर भी बालिकाओं ने अपने प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा कौशल का नयनाभिराम प्रदर्शन किया, जिसे दर्शकों ने मंत्रमुग्ध होकर देखा और सराहा। कार्यक्रम में अनेक विद्वानों व अतिथियों ने भाग लिया।

रजत जयन्ती समारोह २७ से

होशंगाबाद (म०प्र०)। आर्य गुरुकुल, होशंगाबाद में स्वामी ऋतस्पति जी जगदेव नैष्ठिक के आचार्य पद ग्रहण करने के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 27 से 29 नवम्बर तक गुरुकुल में आचार्यपद

रजत जयन्ती समारोह होगा।

इस अवसर पर लगभग 25 कार्यक्रम होंगे। विस्तृत जानकारी हेतु आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक (09424471888) से सम्पर्क किया जा सकता है।

२९ से होगा आर्य महासम्मेलन

नेमदारगंज (नवादा) बिहार। आर्यसमाज नेमदारगंज में मगध प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2015 तक

होगा। संरक्षक सत्यदेव आर्य 'मरुत', प्रधान अश्विनी कुमार व मंत्री संतशरण आर्य द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार 29 को शोभायात्रा निकलेगी।

पाक में हिन्दुओं की स्थिति पर अमरीकी सांसद चिन्तित

वाशिंगटन (भाषा)। कई प्रभावशाली अमरीकी सांसदों ने पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में खासतौर पर अल्पसंख्यक हिन्दुओं के मानवाधिकार की खराब होती स्थिति पर चिन्ता जतायी है।

अमरीकी संसद में इसी हफ्ते सिन्ध में मानवाधिकार पर ब्रीफिंग के दौरान सांसद लोरेटा सांचेज ने आरोप लगाये, "सिन्ध का हिन्दू समुदाय अपनी औरतों के जबरन इस्लाम में धर्मान्तरित करने के लगातार अंदेश में जीता है।" प्रतिनिधि सभा के सिन्ध कॉकस की सह-अध्यक्ष लोरेटा ने कहा कि भयावह मानवाधिकार उल्लंघनों और राजनीतिक

कार्यकर्ताओं एवं असंतुष्टों के लापता होने एवं हत्या किये जाने, हिन्दू महिलाओं के जबरन धर्मान्तरण और धार्मिक उग्र हिंसा जैसे अन्य अपराध के बढ़ने से सिन्ध अब 'मानवीय संकट' में है। करांची में अमेरिकी वार्णिज्य दूतावास की वेबसाइट सिन्धी में शुरू करने में मुख्य भूमिका निभा चुके सांसद ब्रैड शमान ने कहा, "हम सिन्ध और अमरीका के आवाम के बीच रिश्ते बना रहे हैं। हम चाहते हैं कि अमरीकी सरकार सिन्ध के लोगों को सिन्धी भाषा में संबोधित करे। हम अब भी वायस आफ अमेरिका का प्रसारण सिन्धी भाषा में करने में सफल नहीं हुए हैं।

मसाला

के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले
असली मसाले
सच-सच



महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website: www.mdhspices.com



आर्यसमाज के उद्घाटन समारोह में उपस्थित श्रद्धालु नर-नारी व बच्चे- केसरी।



04.10.2015 10

बुजुर्ग सम्मान समारोह का एक दृश्य- केसरी।

मांडले, म्यांमार (बर्मा) में आर्यसमाज का उद्घाटन भारत से पहुंचे आनंद पुरुषार्थी

रामावतार आर्य
होशंगाबाद

बौद्ध देश म्यांमार के मांडले शहर में २६ सितम्बर २०१५ को आर्यसमाज के नये भवन का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में पूरे देश के लगभग सभी ३० आर्य समाजों के आर्य बंधुओं सहित अनेक हिन्दू संस्थाओं के प्रमुख अधिकारी व सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज की।

इस आर्यसमाज के तीन मंजिला वातानुकूलित भवन के निर्माण में लगभग ५० करोड़ च्याट बर्मा मुद्रा (२५ करोड़ भारतीय रुपये) व्यय हुए। ध्यातव्य है कि इसमें केवल मांडले के आर्य समाजी

भाईयों से ही दान लिया गया है।

उद्घाटन हेतु भारत से आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी (वैदिक प्रवक्ता) को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने विधि विधान से उद्घाटन यज्ञ करवाया, जिसमें मुख्य यजमान आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा के प्रधान अशोक क्षेत्रपाल सहित अनेक आर्य पदाधिकारी सपत्नीक विराजमान हुए। इस कार्यक्रम में मांडले क्षेत्र के धार्मिक मामलों के बौद्ध केबिनेट मंत्री श्री थान सो मियम्ब ने अपने उद्बोधन में हिन्दुओं को बर्मा देश के लिये अनुकूल बताया। ध्यातव्य है कि इस देश में मुस्लिमों के कुछ अनुचित क्रिया-कलापों के कारण

उन पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध हैं तथा यहाँ विगत १९८० के बाद से सभा, किसी विद्वान को आमंत्रित नहीं कर पाई थी। आचार्य जी ने वेदों के आविर्भाव से लेकर आर्यों के पराभव तक और वर्तमान परिस्थिति में वैदिक धर्म की नितांत आवश्यकता को प्रस्तुत करता हुआ लगभग सवा घंटे का उद्बोधन दिया, तथा मंत्री जी को आर्यसमाज की मुख्या पुस्तक सत्यार्थप्रकाश भेंट की। इसके अतिरिक्त लगभग ६ आर्य संस्थाओं में आचार्य जी के व्याख्यान हुए और इंडियन हाई कमिश्नर गौतम मुखोपाध्याय जी के निवास पर जाकर उनसे भेंट की, उनको वैदिक साहित्य भेंट किया।

आर्य समाज रावतभाटा में किया बुजुर्गों का सम्मान

रमेश चन्द्र भाट
कोटा (राजस्थान)

आर्य समाज रावतभाटा में बुजुर्ग सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीराम बाल विद्या मन्दिर की प्राचार्या ७४ वर्षीय श्रीमती मीरा चटर्जी का शॉल ओढ़ाकर व अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि बच्चों को शिक्षित करना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है। गरीब बच्चों की मदद कर उनको आगे बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास करती रहूंगी।

ब्यावर के पास लस्सानी-२

गांव से पधारे मुख्य वक्ता मोहनलाल ने बताया कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। उन्होंने पंचमहायज्ञों के बारे में जानकारी दी व बताया कि इन्हें अपने जीवन में अपनाकर मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य की ओर बढ़ा जा सकता है। मोहनलालजी रिटायर होकर अपने गांव में ही रहकर आस-पास के विद्यालयों में वैदिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से वैदिक ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। इनके आर्थिक सहयोग से ओम प्रकाश आर्य ने वैदिक ज्ञान के प्रचारार्थ अपने कल्पना चित्रण से ६ वैदिक कलैन्डरों को बनाया है।

चेतना के स्तर पर कार्य करने से ही योग का लाभ : आचार्य नीरज

अखिल भारतीय योग संस्थान द्वारा
योगाभ्यास कार्यशाला का आयोजन

अशोक शास्त्री
गाजियाबाद।

अखिल भारतीय योग संस्थान के तत्वावधान में कवि नगर स्थित संत कबीर पार्क में योग अभ्यास कार्यशाला का आयोजन संस्थान के संरक्षक राजकुमार त्यागी की अध्यक्षता में किया गया। कक्षा का प्रारम्भ संगठन मंत्री अशोक शास्त्री ने ओ३म् की ध्वनि व गायत्री मंत्र के द्वारा कराया तथा बताया कि दीर्घ श्वास द्वारा शरीर की भीतरी शक्ति का विकास होता है, जिससे हृदय, त्वचा, मस्तिष्क, फेफड़े तथा डिप्रेशन आदि से संबन्धित रोगों के उपचार में सहायता मिलती है। श्रीमती प्रमिला सिंह ने सूर्य नमस्कार आसन करने के लाभ बताते हुए इस आसन का अभ्यास कराया।

मेरठ से पधारे आचार्य यशोवर्धन ने १ करोड़ लोगों को डेंगू की रोकथाम हेतु दवाई पिलाए

का संकल्प दोहराया तथा उपस्थित साधक-साधिकाओं को दवाई पिलाई, जिससे डेंगू का असर न हो।

ऋषिकेश से पधारे आचार्य नीरज योगी ने साधकों को अल्फा मैडिटेशन का अभ्यास कराया तथा बताया कि नासिका द्वारा गहरा लंबा श्वास लेकर मुख से पूर्ण शक्ति के साथ श्वास छोड़ने से शरीर में मृतप्राय कोशिकायें जीवित हो उठती हैं, तथा निष्क्रिय शरीर के अंग को शक्ति मिलती है। शक्ति प्राप्त करने के बाद कुछ मिनट के लिए निर्विचार होकर बैठने से प्राप्त शक्ति पूर्ण रूप से शरीर में समाहित हो जाती है। आचार्य जी ने बताया कि सूक्ष्म व्यायाम शरीर को स्वस्थ रखने का बहुत सरल माध्यम है। योग निद्रा कराने के दौरान आचार्य जी ने जीवन व्यवस्था पर मार्मिक गीत सुनाकर साधक-साधिकाओं को मन्त्र-मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि



योग संस्थान द्वारा आयोजित विराट शिविर में भाग लेते शिविरार्थी- केसरी।

सुरेश बंसल, विधायक गाजियाबाद ने योग कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा यौगिक किया करने का संकल्प लिया।

संस्थान के महामंत्री देवेन्द्र हितकारी ने संत कबीर पार्क की युवा कक्षा के प्रभात जी, अनुराग सहगल व साथियों द्वारा कार्यक्रम

के लिए मंच व्यवस्था प्रबंध के लिए धन्यवाद दिया। अंत में अध्यक्ष कृष्ण कुमार अरोड़ा ने सभी अतिथियों व दूर-दराज से आये साधक-साधिकाओं का धन्यवाद कर शान्ति पाठ द्वारा कार्यक्रम का समापन किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप

से सर्व श्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य, सूर्य प्रकाश विद्यालंकार, सुशील गुप्ता, पिन्दू, मनमोहन वोहरा, शिवदत्त, सुभाष गर्ग, वीना वोहरा, रीतू सिंघल, आशा रानी, अनुज यादव, जयकिशन शर्मा, सतीश गर्ग आदि मौजूद रहे।



यज्ञ करते श्रद्धालुजन- केसरी।

संस्कृति की रक्षा का संकल्प लें

डॉ. अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के धर्म जागरण विभाग के सौजन्य से निकटवर्ती ग्राम भवानीपुर में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें भारी संख्या में ग्रामवासियों ने श्रद्धापूर्ण सहभागिता की।

इस अवसर पर यज्ञ के पुरोहित डॉ. अशोक रस्तोगी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा देश समूचे विश्व में अपनी अनुपम पहचान के लिये प्रसिद्ध है। हमारा भारत एक ऐसा देश है जहां हर घर एक देवालय माना जाता है क्योंकि यहां के घरों में

माता-पिता, दादा-दादी जैसे देव निवास करते हैं। उनकी पूजा और सेवा सुश्रुषा करना सभी का कर्तव्य है। यह देश एक ऐसा देश है जहां नारी को उच्च स्थान दिया जाता है और उसे देवी की संज्ञा प्रदान कर सम्मान किया जाता है।

समापन अवसर पर धर्म जागरण विभाग मुरादाबाद मण्डल प्रमुख आचार्य ब्रह्मपुरी जी ने युवकों व युवतियों का आह्वान करते हुए कहा कि प्रत्येक घर तक रक्षा सूत्र अवश्य पहुंच जाने चाहिए ताकि अपनी संस्कृति की रक्षा का संकल्प स्मरण रह सके। कार्यक्रम में आकाश, मीनाक्षी, अविनाश, रितु, सर्वेद आदि की सहभागिता रही।

भारतीय संस्कृति के संरक्षक थे श्रीकृष्ण

डॉ. अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)

आर्यसमाज में श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. अशोक रस्तोगी ने अपने उद्बोधन में कहा कि युगनायक श्रीकृष्ण सर्वथा देशकाल व परिस्थितियों के अनुसार अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन करते थे। आज जब समूचा विश्व सर्वमान्य नीतियों के अभाव में त्रासद संकट से जूझ रहा है उनका वैचारिक दर्शन और भी प्रासंगिक हो जाता है। नीतिगत संकट से मुक्ति पाने के लिए श्रीकृष्ण जैसे सटीक, तात्कालिक

व व्यावहारिक विचारों के क्रियान्वयन की आवश्यकता है। उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए डॉ. रस्तोगी ने कहा कि राष्ट्र पुरुष युगदृष्टा महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र सर्वथा निष्कलंक, निष्पाप व निर्मल था। उन्हें माखन चोर, वस्त्र चोर, लम्पट रसिया, गोपियों का चोर हरणकर्ता आदि कहकर सम्बोधित करना उनके विराट व्यक्तित्व व निर्मल चरित्र को कलंकित करने का प्रयास है। ऐसा अधार्मिक, अन्यायपूर्ण प्रयास सर्वथा त्याज्य होना चाहिए, ऐसे प्रयास की निंदा की जानी चाहिये। योगेश्वर श्री कृष्ण के गुणों का वर्णन करते हुए ब्रह्मा ने कहा

कि श्रीकृष्ण आर्य संस्कृति के ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र थे जिनके स्वर्णिम आलोक से आर्यजाति अनादिकाल से आज तक अनवरत रूप से अजस्र स्रोत है। युग धर्मा श्रीकृष्ण ने अपने पौरुष, पराक्रम व दूरदर्शिता पूर्ण नीतियों से राष्ट्र के अत्याचारी, अधर्मी व निरंकुश शासकों को धराशाही कर धर्मराज्य की स्थापना की थी। भारतीय संस्कृति के संरक्षण में उनका योगदान अमूल्य, सराहनीय, अनुसरणीय व स्तुत्य है। यज्ञ में चरण सिंह आर्य, सुरेशपाल आर्य, अरुण विश्वा, रिशव विश्वा, मनोज गुप्ता, जयवती देवी, पूरण सिंह ध्यानी, अवधेश आर्य आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

विद्यालय में योग शिविर का आयोजन

गंगाभोगपुर (पौड़ी गढ़वाल)। आर्यकुल योगपीठ के तत्वावधान में राजकीय इंटर कॉलेज में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के 25 बच्चों ने प्रतिभाग किया। विभिन्न प्रकार के आसन, दण्ड बैठक, प्राणायाम, योग की मुद्राओं का अभ्यास प्रत्येक दिन कराया गया।

योग शिविर का आयोजन डॉ. अभयमित्र आर्य द्वारा किया गया।

उनकी प्रशंसा करते हुए प्रधानाचार्य हीरामणि बडोनी ने कहा कि श्री आर्य यमलार्जुनपुर, कैसरगंज, बहराइच उ.प्र. के निवासी हैं, जो इस विद्यालय में विज्ञान अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। योग शिविर संचालित कर उन्होंने एक पुनीत कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि योग से हमारे शारीरिक और नैतिक गुणों का विकास होता है। मनुष्य के शरीर में अनेक बीमारियां घर कर रही हैं, योग ही

एक ऐसा साधन है जिसे अपना कर मनुष्य बीमारियों से मुक्ति पा सकता है। योग से शरीर बलवान व ओजस्वी बनता है। इसलिए प्रत्येक दिन थोड़ा समय निकालकर प्रातःकाल प्राणायाम व यौगिक क्रियाएं अवश्य करनी चाहिए। शिविर में तामेश्वर प्रसार भट्ट, धनवीर सिंह पयाल, नरेश कुमार पुण्डरी, पार्थमित्र आर्य, सचिन कुमार व श्रुतिमित्र आर्य आदि उपस्थित थे।

कोटि-कोटि प्रणाम

09



आर्य जगत के प्रमुख स्तम्भ

इस स्तम्भ में आर्य जगत के प्रमुख स्तम्भों से सम्बन्धित विशेष सामग्री प्रकाशित की जा रही है। एतदर्थ, सचित्र सामग्री आमंत्रित है।

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, मण्डी चोब, अमरोहा- २४४२२१ (उ.प्र.)

लाला लाजपत राय

- वास्तविक नाम लाला लाजपत राय
- जन्म-स्थान २८ जनवरी १८६५ धुन्धिके (पंजाब)
- परिवार हिन्दू वैश्य (मध्यमवर्गीय)
- अध्ययन १. प्रारम्भिक शिक्षा अम्बाला में
२. कानून स्नातक (लाहौर से) १८८६ ई.
- पुस्तकें १. आर्य समाज, २. यंग इण्डिया
३. पॉलिटिकल फ्यूचर ऑफ इण्डिया
४. प्रोब्लेम ऑफ नेशनल एज्यूकेशन इन इण्डिया
- उपाधि पंजाब केसरी (द लॉयन ऑफ पंजाब)
- विदेशी प्रवास इंग्लैण्ड (१९०५ में), इंग्लैण्ड (१९०७ में), जापान (१९१३ में) अमेरिका यूरोप (१९२४, १९२६, १९२७)
- राजनीतिक गतिविधियाँ १. सन् १८८८ में उग्रवादी विचारों के साथ कांग्रेस में प्रवेश, २. १९०७ में मांडले जेल में कैद, ३. गदर पार्टी, आर्य समाज के प्रमुख कार्यकारी, ४. पुनः १९२१ में जेल, ५. कांग्रेस के कलकत्ता विशेष अधिवेशन (१९२०) के अध्यक्ष, ६. स्वराज्य पार्टी के साथ राष्ट्र सेवा, ७. लाल-बाल-पाल का लाल

६. मृत्यु साइमन कमीशन के विरोध में लाठी प्रहार से ३० अक्टूबर १९२८, लाहौर में।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- 2016

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 02 से 08 मार्च 2016 तक

प्रस्थान : 02 मार्च 2016 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप।
(01 मार्च 2016 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)
वापसी : 07 मार्च 2016 को अपराह्न 1:30 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।
अमरोहा आगमन- 08 मार्च 2016 को सायं 5:45 बजे तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

अहमदाबाद, पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका, सोमनाथपुरी, टंकारा आदि ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर सावरमती आश्रम, अक्षरधाम मंदिर, महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ- जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण कार्यक्रम।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी। इस निमित्त 3500/- रुपये (तथा सीनियर सिटीजन के लिए केवल रु. 3000/-) की धनराशि देय होगी। यह राशि आप आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFS Code SBIN0000610 में जमा करा सकते हैं।

या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 30 नवम्बर 2015 तक प्राप्त हो जानी चाहिए। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय है।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● (AC III व II में भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। किराये का अन्तर देय होगा।) ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैनसिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तैलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है। आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक आर्य- संपादक/संयोजक (09412139333)

□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412),

□ नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405)।

संक्षिप्त समाचार

उत्सव सम्पन्न

हसनपुर (अमरोहा)। आर्य समाज का 110वां वार्षिकोत्सव 10 से 12 अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर डॉ० ओमव्रत आचार्य, आचार्य संजीव रूप, आचार्य प्रियंका भारती, डॉ० अतरसिंह सोलंकी आदि सहित अनेक विद्वान भजनोपदेशक उपस्थित थे। प्रधान देवेन्द्रकुमार आर्य, मंत्री नन्हें सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र गुप्त एवं स्वागताध्यक्ष विनय कुमार आर्य ने सभी विद्वानों तथा अतिथियों का आभार जताया।

वार्षिकोत्सव आयोजित

इस्लामनगर (बदायूँ)। आर्य समाज आर्यनगर (इस्लामनगर) का उत्सव 7 से 9 नवम्बर 2015 तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यह जानकारी संजीव गुप्ता- प्रधान, शिवओम अग्रवाल- मंत्री, व श्रवण कुमार कोषाध्यक्ष ने दी।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मानकजूड़ी (अमरोहा)। आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 17 से 19 अक्टूबर तक भव्यता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भजनोपदेशक घनश्याम प्रेमी, अधिष्ठाता हरिश्चन्द्र आर्य, यज्ञमुनि, डॉ० चन्द्रहास, स्वामी सुकर्मा नन्द, मुंशी होराम सिंह, सेठ होराम सिंह आदि सहित क्षेत्रीय जनता ने भारी संख्या में सहभागिता की। तीनों दिन प्रातःकालीन वेला में योग एवं प्राणायाम शिविर का भी आयोजन किया गया।

उत्सव मनाया

दड़ियाल (अमरोहा)। 3 से 5 अक्टूबर 2015 तक आर्यसमाज का 18वां वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य ब्रजेश, रामगोपाल आर्य, कुलदीप आर्य, सुलभा शास्त्री तथा स्वामी भजनानन्द आदि विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिवचरन सिंह आर्य-संरक्षक, ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य-अध्यक्ष, राजेश कुमार आर्य- मंत्री, मूलचन्द्र आर्य-कोषाध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हैदराबाद सत्याग्रह पर यज्ञ

अमरोहा। आर्यसमाज जयओम नगर में हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। ज्ञातव्य है कि अक्टूबर 1938 से अगस्त 1939 तक हैदराबाद में आर्य समाज द्वारा वेदादि शास्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के कारण निजामशाही के विरुद्ध लगभग 10 माह तक यह सत्याग्रह चला था, जिसमें अनेक सत्याग्रहियों ने अपना बलिदान दिया। कार्यक्रम में प्रधान-दीपक अग्रवाल, शक्ति कुमार अग्रवाल, श्रीमती हेमलता, मंजू रानी आदि उपस्थित थे।

महात्मा चैतन्यमुनि को 'हिमोत्कर्ष हिमाचलश्री' पुरस्कार

अनुराग

सुन्दरनगर (मण्डी) हि०प्र०।

मूलतः हिमाचल प्रदेश निवासी वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता व आनन्दधाम आश्रम उधमपुर, जम्मू काश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक, गुरुकुल करतारपुर के संरक्षक तथा अन्य अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक एवं संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को 'हिमोत्कर्ष साहित्य संस्कृति एवं जन कल्याण परिषद्' की ओर से उनके द्वारा साहित्य एवं समाज कल्याण के क्षेत्र में किए गए कार्य हेतु 'हिमोत्कर्ष हिमाचली सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इलेक्ट्रो होम्योपैथि हेतु प्रस्ताव की मांग

मिथलेश कुमार मिश्रा
लखनऊ

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ.प्र. के चेयरमैन मौ. हाशिम इदरीसी के अनुरोध पर उत्तर प्रदेश शासन ने बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ.प्र. से पंजीकृत/नवीनीकृत चिकित्सकों/चिकित्सालयों के पंजीकरण हेतु महानिदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें उ.प्र. से सुस्पष्ट प्रस्ताव मांगा

उल्लेखनीय है कि महात्माजी की अब तक लगभग 50 साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा इन्हें अब तक साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, लघुकथा, गीत, गज़ल, कविता, नाटक तथा निबन्ध आदि साहित्य की प्रत्येक विधा पर देश को उत्तम साहित्य प्रदान किया है। समाजसेवा के लिए भी इनका जीवन सदा ही समर्पित रहा है। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्यवीर संचालक, वेदप्रचार अधिष्ठाता, महामंत्री तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अभूतपूर्व सेवा की है

है। यह सूचना बोर्ड के प्रवक्ता प्रमोद शंकर बाजपेई ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी।

श्री बाजपेयी ने बताया कि भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 21 जून, 2011 तथा उत्तर प्रदेश शासन, चिकित्सा अनुभाग-6 द्वारा 04 जनवरी, 2012 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा, शिक्षा, रजिस्ट्रेशन, अनुसंधान एवं विकास हेतु शासनादेश जारी किये जा चुके हैं।

आर्यसमाज में बांटे चारों वेदों के सैट

अमरोहा। आर्य समाज में आयोजित राष्ट्र कल्याण यज्ञ में 30 आर्य परिवारों ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द द्वारा चारों वेदों के सैट वितरित किये गये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित वेदों के सैट लागत से भी कम मूल्य पर बांटे गये। आर्य समाज के प्रधान हेतराम सागर एवं मंत्री राजनाथ गोयल के अनुसार अभी और परिवारों तक वेदों के सैट पहुंचाए जाने हैं। इस अवसर पर स्वामी जी

के निर्देशन में सम्पन्न अग्निहोत्र में राष्ट्र के कल्याण की कामना की गयी। स्वामी जी ने कहा कि वैदिक धर्म का पथ ही सत्य सनातन व कल्याणकारी है।

कार्यक्रम में वीरेन्द्र कुमार आर्य, हरिश्चन्द्र आर्य, विनय प्रकाश आर्य, डॉ० अशोक कुमार आर्य, डॉ० बीना रुस्तगी, शक्ति कुमार अग्रवाल, विश्वदेव रुस्तगी, अंजु आर्या, उषा आर्या, तेजपाल आर्य, आशा आर्या, व अंकित आर्य सहित अनेक श्रद्धालु जन उपस्थित थे।

हार्दिक श्रद्धांजलि

आचार्य नवल किशोर
का निधन

समस्तीपुर (बिहार)। आर्यसमाज के प्रधान आचार्य नवल किशोर शास्त्री (60) का आकस्मिक निधन हो गया। वे जीवनपर्यन्त आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति पूर्ण मनोयोग से समर्पित रहे।

विद्यादेवी नहीं रहीं

खजुरी (चम्पारण)। नटकिया गंज निवासी 58 वर्षीय विद्यादेवी का आकस्मिक निधन हो गया। यह जानकारी ज्ञानेन्द्र शास्त्री ने दी है।

समारोह सम्पन्न

समस्तीपुर (बिहार)। महर्षि दयानन्द आर्य वैदिक (एमडीएवी) गुरुकुल आजाद नगर मोहनपुर में 20 अक्टूबर को पर्यावरण प्रदूषण निवारण एवं स्वच्छता महाभियान कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य मधुकान्त आर्य ने कहा कि वेदमार्ग द्वारा ही अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस अवसर पर उपस्थित जनों ने स्वच्छता रखने और पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने हेतु प्रयास करने का संकल्प लिया। वैदिक जयघोष और भावी कार्ययोजना के साथ समारोह उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

धूमधाम से मनी रजत जयन्ती

पूठ (हापुड़)। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में गुरुकुल महाविद्यालय, पुष्पावती (पूठ) की रजत जयन्ती 6 से 8 नवम्बर तक धूमधाम से मनायी गयी। इस अवसर पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यौगिक क्रियाओं के भव्य प्रदर्शन की प्रस्तुति दी। समारोह में सभा प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा, सभामंत्री एवं गुरुकुल के अधिष्ठाता स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती आदि सहित भारी संख्या में क्षेत्र व प्रदेश के आर्यजन उपस्थित थे।

वेदकथा में ज्ञानामृत की वर्षा

सहारनपुर। आर्यसमाज खलासी लाइन के प्रांगण में आचार्य अर्जुनदेव वर्णी के पौरोहित्य में विधि-विधान से यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित वेदकथा में भजनोपदेशक ऋषिपाल पथिक ने कहा कि ऋषिवर दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में 377 ग्रन्थों का निचोड़ है। कभी भारत में 7 हजार गुरुकुल थे, जो अब घटकर मात्र 500 रह गये हैं। इनमें भी कई जर्जर अवस्था में हैं। यह हमारे पतन का प्रमाण है। इस अवसर पर आचार्य

वर्णी ने कहा कि वेद ज्ञान का अक्षय भण्डार है। ये अपौरुषेय तथा शाश्वत हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के माध्यम से क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकट हुए थे। आर्य समाज का तीसरा नियम है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तथा वेद का पढ़ना-पढ़ना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। शांतिपाठ व जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्त्री आर्यसमाज का यज्ञ व निर्वाचन

अमरोहा। स्त्री आर्य समाज द्वारा आर्य समाज परिसर में पाक्षिक श्रृंखला के अन्तर्गत विश्व कल्याण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। अंजु आर्या व उषा आर्या के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ की मुख्य यजमान डॉ० बीना रुस्तगी, शकुन्तला रुस्तगी, सुमन अरोड़ा, मधु खुराना, सुप्रिया खुराना व निर्मल विरमानी रहीं।

निर्वाचन सम्पन्न : इस वेला

में स्त्री आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन भी सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ, जिसमें मधु खुराना- प्रधाना, अंजु आर्या- मंत्राणी, प्रिया गुप्ता- कोषाध्यक्षा सहित सुप्रिया खुराना- उपप्रधाना, अर्चना गुप्ता- उपमंत्राणी व उषा आर्या- यज्ञ अधिष्ठात्री चुनी गयीं। नवगठित कार्यकारिणी का पुष्पमालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

आर्यजगत के युवा वैदिक मिशनरी

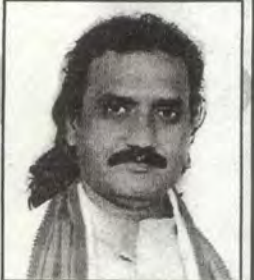
आचार्य संजीव रूप

साधक, सरल, सहज, सैद्धान्तिक, वेदोपदेशक, हर्षोत्पादक खण्डन शैली, कवि, चिकित्सक, योग-यज्ञ, भजन-विशेषज्ञ, अनेक पुस्तकों के लेखक। अनेक आर्य समाजों, संस्थाओं के संस्थापक गौरक्षिणी सभा व आर्य संस्कारशाला गुधनी के संचालक, होली के पर्व पर एक साथ 400 घरों में यज्ञ कराने वाले पुरोहित, शास्त्रीय शैली के मधुर गायक, संस्कार-मर्मज्ञ, परोपकारी सभा व अनेक समाजों-संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत, दोनों समय अग्निहोत्र व पंचयज्ञ करने वाले, 1992 से ग्राम में नित्य ब्रह्ममुहूर्त में स्थाई लाउड से प्रवचन करने वाले संगीतमय वेद कथाकार हैं ग्राम गुधनी, तहसील बिल्सी, जनपद बदायूँ (उ.प्र.) निवासी आचार्य संजीव रूप।

उत्सवों की सफलता हेतु आमंत्रित करें। प्रतिदिन आस्था-भजन टी.वी. चैनल पर देखें। चलभाष- 9997386782, 9458442044, 9760721720 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

कार्यालय- 530, पॉकेट-2, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-63

Email- acharyaroop@gmail.com



ऋषि निर्वाण दिवस का सन्देश

इस वर्ष भी गत वर्षों की भाँति हमने दीपावली के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में नाना प्रकार के आयोजन किये। कहीं प्रवचन हुए, संगीत-संध्या हुई, यज्ञ हुए, कहीं प्रभात फेरियाँ निकलीं तो कहीं उत्सव हुए। हमने फिर से कुछ करने का संकल्प लिया अथवा नहीं- यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्योंकि आज महर्षि दयानन्द के चिन्तन, आर्य समाज के मन्तव्य तथा वैदिक दर्शन की प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पहले से भी अधिक उपादेयी प्रतीत होती है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक प्रगतिशील तथा क्रांतिकारी संगठन के रूप में की थी, परन्तु आजकल आर्यसमाज केवल हवन यज्ञों तक ही सीमित हो गया है। इसलिये पाखंड और अन्ध विश्वास खूब बढ़ रहे हैं। इसको वैदिक सिद्धांतों का प्रचार भी करना चाहिये। वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'न तस्य प्रतिमा अस्ति।' चारों वेदों में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है, जिसमें कहा हो कि ईश्वर की इस प्रकार की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की जाये। उसे तो निराकार ही बताया है जिसका विस्तृत वर्णन आर्यसमाज के दूसरे नियम में किया गया है। किंतु फिर भी आज चारों ओर मूर्तिपूजा, रूढ़िवाद, पोंगापन्थ, आडम्बरवाद का बोलबाला है। हम वेद-विरुद्ध मत-मतान्तरों का अनुसरण कर रहे हैं और सामान्य आर्यों की बात ही छोड़िए, आर्यसमाजों के पदाधिकारी और विद्वान भी इसका विरोध करते हुए इसलिए डरते हैं कि लोग नाराज न हो जायें। इस तरह डरने से आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कैसे होगा?

आज यह तो एक सुखद अनुभूति का विषय है कि स्वामी रामदेव, स्वामी कर्मवीर सरीखे योगप्रवर्तकों के सद्प्रयासों तथा भारत सरकार के प्रशंसनीय कदम के परिणाम स्वरूप आज विश्व भर में योग की दुन्दुभि बजी है। 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस इसी की एक परिणति है। आज आम लोग भी यह अनुभव कर रहे हैं कि प्राणायाम तथा आष्टांग योग जहाँ शारीरिक सौष्ठव व ओज के लिए सहायक है, वहीं ये ईश्वर प्राप्ति का भी साधन हैं।

निश्चय ही हमें ऋषि निर्वाण दिवस पर यह संकल्प लेना होगा कि हम आर्यसमाज के छठे नियम में व्यक्त भावना 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' की भावपूर्ण शब्दावली को आत्मसात् करते हुए तदनु रूप प्रयत्न भी करेंगे और सम्पूर्ण समाज को आर्यसमाज से जोड़ने का श्रम और साधना करेंगे। वस्तुतः यह निर्विवाद है कि आर्यसमाज एक आन्दोलन है। इसलिए जब तक यह समाज सुधार तथा देश और विश्व के कल्याण के लिए आन्दोलन करता रहेगा, तब तक इसकी जीवन्तता और सार्थकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लग सकता। अतः आओ! ऋषि-निर्वाण दिवस पर हम संकल्प लें कि सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाएंगे और ऋग्वेद के मंत्र का उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संकल्पनाद दिग्दिगन्त में गुंजायमान करेंगे।

गुरुकुल शिक्षा क्यों : बापू



गुरुकुल केवल संस्था ही नहीं, वरन् शिक्षा की एक सम्पूर्ण प्रणाली है, जिसका प्रादुर्भाव भारतीयों को दोगले अंग्रेज बनाने के उद्देश्य से भारत में लार्ड मैकाले द्वारा प्रवर्तित अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध देश के रूप में हुआ। जो लोग गुरुकुल को केवल आर्य समाजी संस्थान के रूप में देखते हैं, वे चाहे आर्य समाजी हों या गैर आर्यसमाजी, इस सच्चाई का अनुभव नहीं कर सकते। भारत में अंग्रेजी शिक्षाका सूत्रपात सन् 1836 में लार्ड मैकाले द्वारा किया गया था और उसने उसका

उद्देश्य साफ शब्दों में यह बताया था कि हमें भारत में एक ऐसी जमात पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए, जो रंग-रूप व रुधिर-मज्जा आदि में भले ही भारतीय रहे लेकिन रहन-सहन, आचार-विचार और दिल-दिमाग में पूरी तरह अंग्रेज बन जाये। यह जमात हमारे और उन करोड़ों के बीच मध्यस्थ का काम करेगी, जिन पर हमें शासन करना है। मैकाले को अपने मिशन में कितनी सफलता प्राप्त हुई, यह दिखाने के लिए किसी प्रमाण की जरूरत नहीं है। करोड़ों देशवासियों और मुट्ठी भर शासकों में मध्यस्थ का काम करने वाले हमारे ही देशवासी हैं।

यह विचार महात्मा गांधी द्वारा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के एक मंच से व्यक्त किये गये।

-कृष्ण मोहन गोयल,
११३- बाजार कोट, अमरोहा

यह मूर्ति कौन से शिव की है?

वेदप्रकाश शास्त्री

एक स्थान पर बहुत से पुरुष, महिला तथा बच्चे एकत्रित थे। उनके बीच में एक विशाल पत्थर की प्रतिमा थी। मैंने उनसे पूछा कि यह प्रतिमा किसकी है? एक ने उत्तर दिया कि यह प्रतिमा शिव की है। मैंने उसी से फिर पूछा कि यह प्रतिमा कौन से शिव की है? तब उसने बड़े आश्चर्य से मुझसे ही प्रश्न किया कि शिव कितने हैं और भी सभी व्यक्ति उत्सुक होकर हम दोनों की बातें सुन रहे थे।

मैंने उन्हें बताया कि शिव तीन हैं। उसने फिर आश्चर्य पूर्वक मुझसे पूछा कि तीन शिव कौन-कौन से हैं? मैंने उन सबको बताया कि एक शिव परमपिता परमात्मा का नाम है क्योंकि उसका मुख्य नाम तो ओ३म् है किन्तु उनके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार असंख्य नाम हैं। जिनमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव, रुद्र, गणेश, अग्नि, वायु, वरुण आदि असंख्य नाम हैं। परमेश्वर निराकार है। इसलिए जो निराकार है, उसकी प्रतिमा बनानी संभव नहीं है। यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि निराकार की प्रतिमा बन सकती है, तो वह वायु की प्रतिमा बनाकर दिखाए अथवा अपनी बुद्धि, अपना मन अथवा अपनी आत्मा की ही प्रतिमा बनाकर दिखाए। ऐसा कभी संभव नहीं है कि जिसका आकार ही न हो, उसकी प्रतिमा कोई बना सके। इसलिए जो शिव सारे संसार को बनाकर सब जीवों का कल्याण करता है, उस परम पिता परमात्मा रूपी शिव की प्रतिमा यह नहीं है।

दूसरा शिव राजा अग्निष्वात्त के पुत्र का नाम शिव है। उसे महादेव भी कह देते थे। जो हिमालय पर्वत के आधे पूर्वोत्तर भाग के राजा थे। जिनकी राजधानी कैलास पर्वत थी। यह सतयुग के प्रारम्भ में हुए थे। उस समय शिव का चित्र बनाने वाला कौन चित्रकार था? यदि कोई शिव का चित्र बनाता, तो पहले शिव के पिता का भी चित्र बनाता। इसलिए यह प्रतिमा उस शिव की भी नहीं है।

तीसरा शिव हमारा राष्ट्र आर्यावर्त है। इसी शिव की अर्थात् आर्यावर्त राष्ट्र रूपी शिव की यह प्रतिमा है। इसी आर्यावर्त शिव से जुड़ा हुआ त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत प्रदेश है। यहीं पर आदि सृष्टि में सर्वप्रथम मानव आर्यावर्त राष्ट्र में आकर बसते चले गये। यह आर्यावर्त है। वह राष्ट्र है, जिसकी भौगोलिक सीमा परमेश्वर ने प्रकृति द्वारा बनायी है।

आर्यावर्त रूपी शिव के प्रथम राष्ट्रपति महर्षि मनु से जब यह पूछा गया कि आर्यावर्त रूपी शिव की भौगोलिक स्थिति क्या है? तब उन्होंने बताया कि आसमुद्रातु वै पूर्वात आसमुद्रात पश्चिम्यात्। तयोरेवान्तरं गिर्यो आर्यावर्तं प्रचक्षते॥ अर्थात्

पूर्व दिशा के समुद्र से लेकर पश्चिम दिशा के समुद्र तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर विंध्याचल पर्वत सहित भूभाग आर्यावर्त राष्ट्र कहलाता है। यह अत्यंत गम्भीरतापूर्वक विचारणीय है कि इस आर्यावर्त रूपी शिव की परिधि प्रकृति के द्वारा ही रचित है। ऐसा विश्व में दूसरा कोई भी राष्ट्र नहीं है, जिसकी रचना प्रकृति के द्वारा हुई हो। सबने अपने-अपने राष्ट्र की सीमा स्वयं निर्धारित की है। इस आर्यावर्त शिव की ही यह प्रतिमा है। इसकी प्रतिमा बनाने वाले रचनाकार ने स्वयं लिखा है कि- पिनाकफणी बालेन्द्र भस्म मन्दाकिनी युता। पवर्ग निर्मिता पूर्ति रपवर्ग प्रदास्तु नः॥ अर्थात् पिनाक अर्थात् धनुष आर्यावर्त शिव की देन है क्योंकि धनुर्विद्या का प्रारम्भ आर्यावर्त में ही हुआ। यहां के जैसे धनुर्धर जो शब्दबेधी बाण मारने वाले महाराजा दशरथ, वीरवर अर्जुन तथा महाराजा पृथ्वीराज जैसे अन्यत्र कहीं नहीं हुए। इसलिए आर्यावर्त को पिनाकी कहा गया है।

इस आर्यावर्त शिव की मूर्ति जिसे बनाने वाले कलाकार ने कहा है कि प वर्ग अर्थात् प, फ, ब, भ, म इनके आधार पर इस शिव की मूर्ति का निर्माण किया गया है। इस शिव की मूर्ति को ऊपर से देखना शुरु कीजिए और गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार कीजिए। इस शिव की मूर्ति के ऊपर चन्द्रमा है। यह इसलिए है कि चन्द्रमा की चांदनी में आप सारी रात बैठें, आपको आनन्द ही मिलेगा। इसलिए आर्यावर्त शिव में जो निवास करते हैं, वे आर्यजन जीवन पर्यन्त प्रसन्नचित्त ही रहते हैं। अब मूर्ति के नीचे देखिए। इसके सिर पर जटाएं हैं अर्थात् शिव का सिर हिमालय पर्वत है। उस पर वृक्ष, लता, औषधि, अन्न, फल, फूल ये शिव की जटाएं हैं। इन्हीं जटाओं से गंगोत्री से गंगा प्रवाहित हो रही है। इसलिए कहा है कि शिव की जटाओं से गंगा निकली है। इसीलिए इसे सुरसरिता भी कहते हैं। प वर्ग का दूसरा अक्षर फ है। फ से फणी अर्थात् फण वाले भयंकर सांप इस शिव के गले में, भुजाओं में, कमर में लपेटे गये हैं अर्थात् आर्यावर्त में

राष्ट्रद्रोही सपों को राजा कुचल कर फेंक देते थे। इसका प्रभाव राष्ट्र पर नहीं पड़ सकता था। ब अक्षर से बालेन्दु अर्थात् द्वितीया का चन्द्रमा, जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है। प वर्ग का चौथा अक्षर भ है। भ से भस्म। इस आर्यावर्त शिव की प्रतिमा पर सर्वत्र भस्म लगी रहती है क्योंकि आर्यावर्त शिव के निवासी आर्यजन जानते थे कि 'भस्मा शरीरम्' अर्थात् शरीर का अन्त भस्म है। इसलिए आर्यजन इस शरीर को स्वस्थ तो रखते थे क्योंकि स्वस्थ मनुष्य ही शुभ कार्य कर सकेगा। किंतु आर्यजन केवल शरीर के लिए जो आवश्यकता है, रोटी, कपड़ा और मकान इनमें ही अपना जीवन नष्ट न करके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, जो मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, उसकी प्राप्ति के लिए सदा सजग रहते थे। शास्त्र में कहा गया है कि 'असिद्धं बहिरंगम् अन्तरंगम्' अर्थात् अन्तरंग कार्य करने में बहिरंग कार्य असिद्ध कर दिये जाते थे। अंतरंग कार्य है 'आत्मा' और बहिरंग कार्य है 'शरीर'। इसलिए शरीर को स्वस्थ रखते हुए मोक्ष को प्राप्त करके परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहते थे। प वर्ग का अन्तिम अक्षर म है। म से मन्दाकिनी अर्थात् गंगा आर्यावर्त शिव की अमूल्य सम्पत्ति है। जिसका जल वर्षों तक रखने पर भी दूषित नहीं होता। इस प्रकार पवर्ग के पांचों अक्षरों के आधार पर इस शिव की मूर्ति का निर्माण करने वाले ने स्पष्ट कर दिया है कि पुनः और अनेक प्रकार की कल्पना करना व्यर्थ है। इसलिए जहां कहीं भी शिव की मूर्ति रखी हुई हो, उस पर जल चढ़ाना, फूल रखना, मीठा आदि प्रसाद रखना तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करना अत्यंत नासमझी है। स्पष्ट प्रमाण है, इसलिए जहां कहीं भी शिव की प्रतिमा दिखाई पड़े तो मन में विचार करना चाहिए कि हम राष्ट्रभक्त हैं। और इसके प्रति सदा समर्पित रहेंगे, जिससे राष्ट्रद्रोही लोग राष्ट्र को हानि न पहुंचा सकें। यही शिव की प्रतिमा का रहस्य है। इसे हमें समझना तथा दूसरों को भी समझाना होगा।

नांगल सोती (बिजनौर) ७०५०
मोबा. : 09319958003

महाराणा प्रताप और राष्ट्रीय स्वाभिमान

9 मई को महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाई जाती है। महाराणा प्रताप ने राष्ट्र की रक्षा के लिए घास की रोटी खाकर जंगलों में ही रहकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। भामाशाह जैसे दानी ने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना खजाना खोल दिया था, जिससे अस्मिता की रक्षा हो सके। इसी प्रकार देश में अन्य बलिदानी रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद हुए हैं। इसलिए राष्ट्र की रक्षा के लिए हमें सर्वस्व अर्पित करना चाहिए किंतु वर्तमान समय में कुछ लोग अपनी रक्षा के लिए देश का बलिदान करने को तैयार हैं। मुगलकाल में महाराणा प्रताप का हल्दी घाटी का युद्ध, चित्तौड़गढ़ किले की रक्षा करने हेतु अपने बच्चों को घास की रोटी खिलाना किंतु पत्नी ने कभी भी मुगलों से पीछे हटने को नहीं कहा तथा राणा को राष्ट्ररक्षा के लिए पूरा सहयोग दिया। उनसे हम सब प्रेरणा लें।

-श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया, कायमगंज (फर्रुखाबाद)

ऋत-सत्य ज्ञानदीप से करोड़ों दीप जला गये

महर्षि दयानन्द सरस्वती

पं० उम्मेदसिंह विशारद

जब-जब सृष्टि में ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान के अभाव से संकट उत्पन्न होता है तब-तब मोक्ष से लौटकर महापुरुष का जन्म होता है। ऐसे व्यक्ति विश्वात्मा के वाहन होते हैं किन्तु वे परमात्मा के अवतार नहीं होते, परन्तु उनमें विषम परिस्थितियों को मिटा देने के लिए शक्ति का संचार हो जाता है। अठारहवीं व उन्नीसवीं सदी में भारत की विषम परिस्थितियों को चेलेंज के रूप में ऋषि दयानन्द जी ने स्वीकार किया।

प्रथम घटना :- ऋषि दयानन्द जी के जीवन में महाशिवरात्री के पर्व पर रात भर जागकर शिव जी के मन्दिर में मूर्ति के सामने बैठकर उनके दर्शन की प्रबल इच्छा से सारी रात काट दी। शिवजी के दर्शन तो क्या होने थे, मन्दिर में सन्नाटा देखकर चूहे बिलों से निकल आये और मूर्ति पर चढ़े। प्रसाद को खाने लगे, और उछल कूद करने लगे। यह सब देखकर मूलशंकर (बचपन का नाम) के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई ये कैसा देवता है जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं। इस समस्या का समाधान कोई नहीं कर सका यही कारण है कि अपने जीवनकाल में दयानन्द जी ने मूर्ति पूजा का जबर्दस्त खण्डन किया और रुढ़िवादिता के घोर शत्रु हो गये। यही घटना विश्व का कल्याण कर गई।

द्वितीय घटना :- दीपावली के महापर्व पर इस नश्वर संसार से विदा लेते समय अन्तिम बार कहा कि हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की! वाह क्या बात है किसी से न गिला न शिकवा अपितु अपने प्रभु द्वारा जो संसार चक्र चल रहा है और जो जीवों का कल्याण हो रहा है उस ईश्वर इच्छा का स्मरण करते हुए अन्तिम विदा ली, और उस दीपावली में एक ज्ञान दीप से करोड़ों दीप जला गये।

विलक्षण प्रतिभाशाली ऋषि दयानन्द :- महर्षि दयानन्द सच्चे ईश्वर भक्त थे, और इतना बड़ा आत्मबल था कि सदैव सत्य प्रकट करने में अग्रणी रहते थे। वे जानते थे जब तक असत्य का खण्डन नहीं किया जायेगा, तब तक सत्य का मण्डन नहीं होगा। यही कारण है एक तरफ दयानन्द थे और दूसरी ओर सारा जमाना था। उन्होंने समाज की तमाम बुराईयों को सुधारने के चैलेन्ज को स्वीकार किया

और जमाने की गर्दन पकड़कर अपनी ओर चलाया। आज संसार में जो तमाम सुधारवादी विचार दिख रहे हैं वह सब ऋषि दयानन्द जी की देन है।

आज करोड़ों आर्य भी असत्य खण्डन में असमर्थ हैं :- महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज खोलकर सदैव के लिए सत्य का मंडन और असत्य का खण्डन करने के लिए आर्यों को एक मंच दिया है और इंदनमम का पाठ पढ़ाया था, परन्तु आज हम मम-मम का पाठ तो पढ़ रहे हैं, इंद न मम को एक किनारे रख दिया है। आज अधिकांश आर्यों के परिवार से लेकर चारों ओर समाज में कदम-कदम पर धार्मिक,



सामाजिक अन्धविश्वास परोसा जा रहा है और हम असहाय मूक बनकर देख रहे हैं। हम महर्षि की आज्ञा की अवज्ञा व वैदिक सिद्धान्तों से समझोता करते जा रहे हैं। यदि आर्य जगत समाज की एक-एक बुराई को लेकर क्रमशः आन्दोलित, सामूहिक रूप से एक स्वर में हो जाये तो समाज में व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। हम आर्यों का कार्य केवल आर्य समाज भवनों की रक्षा करना ही नहीं हैं अपितु बाहर भी निकलना पड़ेगा।

महर्षि ने ज्ञान दीप द्वारा तमाम अन्धविश्वासों से सजग कराया :- स्वामी विरजानन्द जी द्वारा तीन वर्षों में आर्ष, अनार्ष साहित्य का ज्ञान प्राप्त करके रण क्षेत्र में उतर पड़े। ऋषि दयानन्द समझते थे कि हिन्दू समाज का सम्पूर्ण ढांचा बिगड़ा हुआ है। वेदों और उपनिषदों के अर्थ का अनर्थ करके और पुराणों के कल्पित कथाओं व साहित्य से चारों ओर अन्धविश्वास फैल गया है। इसीलिए उन्होंने सबसे पहला प्रहार वेदों के अर्थों पर किया और सायणाचार्य, महीधर, मेक्समूलर आदि ने जो वेदों के अर्थ किये थे उन्हें नकार दिया क्योंकि वे इतिहासपरक अर्थ थे महर्षि जी ने ईश्वर परक अर्थ रखकर एक नई हलचल मचा

दी। धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिला दी। सम्पूर्ण भारतवासी पाँच हजार साल से चली आ रही धार्मिक विचारधाराओं से बंधे हुए थे भारतीयों को सत्य विचारधारा ने अत्यन्त प्रभावित किया। सब आश्चर्य चकित थे कि एक देवदूत अकेला सम्पूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कुरृतियों पर कैसे निर्भीकता से प्रहार कर रहा है। एक नया आन्दोलन खड़ा हो गया। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के रुढ़ी अर्थों को बदल दिया, तथा धार्मिक क्षेत्र में रुढ़ीवाद पर प्रहार, राजनैतिक क्षेत्र में रुढ़ीवाद पर प्रहार सामाजिक क्षेत्र में रुढ़ीवाद पर प्रहार, जाति व्यवस्था, अन्ध पूजा पद्धति पर प्रहार किया, भारतवर्ष अंग्रेजों का गुलाम था, उससे मुक्ति हेतु स्वराज्य शब्द का दीप जलाया, स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया।

महर्षि दयानन्द जी सदैव के लिये आर्ष साहित्य रचकर ज्ञान दीप जला गये :- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व वेदों का आर्ष भाष्य व जीवन निर्माण के सोलह संस्कारों के लिये संस्कार विधि तथा पंच यज्ञ महाविधि, गौकरुणानिधि, व्यवहारभानु व अन्य साहित्य रचकर और इनका निरन्तर प्रचार-प्रसार हेतु आर्य समाज का संगठन बना कर गये। आर्यों के लिये इन सभी को मार्ग निर्देशिका बना गये।

आर्यों का अतीत, वर्तमान व भविष्य :- महर्षि दयानन्द जी के दिवंगत के अर्द्ध शताब्दी तक आर्यों का त्याग का स्वर्ण युग था, वर्तमान में आन्दोलन, तथा असत्य का खण्डन, व आर्य नेतृत्व द्वारा कुरीतियों पर प्रहार एक स्वप्न रह गया है और सनातनी भद्र मूर्तियों की पूजा करते हैं, और आर्य समाजी मन्दिरों में यज्ञ की पूजा द्वारा ईश्वर को याद करते हैं। जो आर्य समाज का आन्दोलन था वह अतीत होता जा रहा है। नई पीढ़ी को कल का आर्य समाज दिशाहीन है। उनको विरासत में आर्यसमाज मन्दिरों की रक्षा व रविवार को केवल 2 घण्टे यज्ञ व सत्संग के संस्कार मिल रहे हैं। इसलिये जो वर्तमान में आर्य जगत में हो रहा है, भविष्य में वही होगा, इसको नकार नहीं सकते हैं। आर्यों हमें आर्य समाज की दशा और दिशा पर चिन्तन करना ही पड़ेगा।

वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून) मोबाईल : 9411512019

विज्ञापन कॉलम

इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वों पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं। चलभाष- 09412139333

आर्यावर्त प्रिन्टर्स के नए प्रकाशन

आज ही मंगाएं दयानन्द सप्तक (सवैया संग्रह)



कवि- वीरेन्द्र कुमार राजपूत
प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी,
निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ०प्र०)
दूरभाष : 05922-262033
मूल्य : तीन सौ रु० प्रति सैंकड़ा



सुमित अग्रवाल, धनौरा द्वारा
संस्कृत व्याकरण पर प्रकाशित
एक लघु ट्रेक्ट- ब्रह्मराशि
मूल्य : 300/- सैंकड़ा
आज ही मंगाएं
दूरभाष : 05922- 262033,
09758833783

वर्ष २०१६ के भव्य कलैण्डर

महर्षि स्वामी दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के भव्य आकर्षक रंगीन चित्र आर्ट पेपर पर।

साइज 18X23 इंच= 1000/- प्रति सैंकड़ा, 19X23 इंच 500/- प्रति सैंकड़ा। पर्वसूची-नियम।

1000 लेने पर समाज, फर्म, प्रतिष्ठान की छपाई निःशुल्क।
आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०), मोबा. : 9412139333

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)

१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण

: पुस्तक प्राप्ति स्थल :

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'

आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर

बरेली (उ०प्र०)- 243003

चल० : 094123721179, 9759527485

मूल्य : 25 रुपये

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

मुद्रण/प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रेक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

इच्छुक महानुभाव/संस्थाएं प्रकाशन हेतु

तुरन्त सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं० कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922-262033/

09412139333

नम्रप्रति यह सभी कमियां आर्य विद्वानों ने पूरी कर दी हैं। अब धार्मिक अज्ञान व अन्धविश्वास मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द प्रोक्त विचारधारा व उनके साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार करने का समय है। यह तो सम्भव है कि मार्ग में अनेक रूकावटें व समस्यायें आएंगीं परन्तु धीरे-धीरे सफलता मिलना भी आरम्भ हो जायेगा। यदि सत्य का प्रचार करने से सफलता न मिलती होती तो फिर अनादि काल से कोई भी ऋषि-मुनि-विद्वान सत्य का प्रचार क्यों करता ? सफलता मिलती है, इसीलिए प्रचार किया जाता है। हां, सत्य की ही तरह असत्य का प्रचार किया जाये तो उसे भी आंशिक सफलता मिलती है और मिली है। इतिहास में इसके प्रमाण उपस्थित हैं क्योंकि साधारण मनुष्य किसी मान्यता व सिद्धान्त को अपनाने से पहले उस मान्यता व सिद्धान्त की तर्क व प्रमाणों से पुष्टि नहीं करता। अतः सत्य के प्रचारकों को सत्य धर्म का प्रचार ईश्वर का कार्य व उसकी आज्ञा मानकर करना चाहिये।

चूम लेती सफलता सत्य के उस प्रचारक के चरणों को।

जो अपनी जान हथेली पर रखकर सत्य का प्रचार करता है।।

इसका यदि उदाहरण चाहो तो महर्षि दयानन्द का जीवन देखो।

और चाहो तो लेखराम, गुरुदत्त, राजपाल और श्रद्धानन्द को जानो।

शहीद हो गये यह धर्म प्रेमी सत्य वैदिक धर्म के प्रचार के लिए।

आज भी इनका यश विश्व भर में गाते हैं सभी सद्धर्मी बन्धु।।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर, जीवात्मा व जड़ प्रकृति के सत्य स्वरूप पर प्रकाश डाला है और सभी धार्मिक शंकाओं का युक्तिसंगत समाधान किया है जो निष्पक्ष भाव व शुद्ध मन से पढ़ने योग्य है। इनके अध्ययन से ही अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर किया जा सकता है। यही एक मार्ग है जीवन के उद्देश्य पर पहुंचने का, अन्य कोई मार्ग नहीं है।

.....

गाईये संग्रहणीय पुस्तकें :
नास्तविक स्वरूप
 ०/-
पर्यावरण
 ० रु. सैंकड़ा)
 टर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित
 ० न. आवरण, उत्तम कागज
 क- अर्चना यज्ञ पद्धति
 आर्यावर्त कॉलोनी, निकट
 अमरोहा-244221 (उ०प्र०)
 ल्य : पन्द्रह रुपये)

स्वतंत्रता संग्राम के अमर नायक 'वीर सावरकर'

2 जुलाई 1911 को चारखानों वाली खुरदरी गंजी, घुटना, और टोपी, हथकड़ियों, बेड़ियों के आभूषण, हाथ में ताम्रचीनी का लोटा और तश्तरी, संगीनधारी सिपाहियों से घिरा, दुबली-पतली, परन्तु फौलादी कंचन काया वाला, आजादी का यह दूल्हा पोर्ट ब्लेयर के बन्दरगाह पर अपने महाराजा पोत से उतर कर अन्धमान की नारकीय कारागार की ओर बढ़ा, तो मानों सारा द्वीप-पुंज प्रकंपित हो उठा। चलने से पूर्व विनायक ने चारों ओर एक विहंगम सा दृष्टिपात किया और हठात् उनके मुख से एक ऋषिवाणी मुखरित हुई- "आहा, कितना रमणीक टापू है, पर है पराधीन। क्या कभी ऐसा होगा कि भारतमुक्ति के बाद हमारी नौसेना का एक बेड़ा यहां स्थापित हो। इससे हमारा पूर्वी द्वार सर्वथा सुदृढ़ और सुरक्षित रहेगा, और भविष्य में कोई विदेशी शत्रु इधर से आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं कर पाएगा। "यस्य जलं तस्य बलं"। क्योंकि जिसके पास जल है, उसी के पास बल है।

बात आई-गई हो गयी, पर किसे पता था कि श्रापित ऋषि की यह देववाणी कभी भविष्यवाणी सिद्ध होगी। लगभग 15 मिनट तक बेड़ियों, हथकड़ियों की खड़ताल पर चलते-चलते सावरकर उस भीमकाय और भयावदुर्ग रूपी कारागार के प्रवेश द्वार पर पहुंचे। चूं... चर्... के कर्कश स्वर के साथ उसके लौह कपाट खुले और पहला ही टकराव

देश के महान क्रांतिकारी-२

हुआ वहां के खूंखार आयरिश जेलर बारी से, जो स्वयं को वहां का 'बादशाह' और 'खुदा' कहता था।

पहला संवाद- ओ हो तो आप हैं मि० सावरकर, जिसने मासैलिस के तट पर जहाज से भागने की



कोशिश की थी?

जी हाँ।

बताओ तुमने ऐसा क्यों किया? बताओ, डरो नहीं, मैं अंग्रेज नहीं, आयरिश हूँ।

"स्वयं को गुलामी से आजाद करने के लिए। दासता से बड़ा अभिशाप और क्या है? हां, आपके आयरिश होने न होने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं अंग्रेजों की कई बातों का समर्थक और प्रशंसक हूँ। मैंने लन्दन में जीवन का महत्वपूर्ण समय बिताया है। आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि आप आयरिश होकर मुझसे यह प्रश्न पूछ रहे हैं। आयरलैण्ड में आपका 'सिनफिल'

आन्दोलन भी तो अंग्रेजों से मुक्त होने के लिए कब से संघर्ष कर रहा है।" सावरकर के इतिहास ज्ञान और सटीक उत्तर से बारी हक्का-बक्का रह गया। "ओह! मैं तो भूल ही गया था कि आप बैरिस्टर भी हैं।.. भला आपसे बहस कौन कर सकता है? पर एक बात याद रखना कि यहां से भागने की कोशिश मत करना। यहां चारों ओर समुद्र ही समुद्र है, और उसमें हजारों आदमखोर मछलियां पता नहीं, कब तुम्हें निवाला बना लें।

"बारी बाबू, शायद आपको मालूम नहीं है कि मासैलिस में भी मैं समुद्र में ही कूदा था और वहां भी सभी प्रकार की मछलियां थीं, पर मैं सागर तट पर पहुंच ही गया था। खैर, वह सब जाने दीजिए।" जाने तुम्हें कौन देगा, बैरिस्टर! तुम छोटे-मोटे समय के लिए नहीं, पूरे पचास सालों तक हमारे मेहमान रहोगे। वैसे भी यहां आने वाला मुश्किल से ही सही-सलामत लौट पाता है। कुछ पागल हो जाते हैं, और कुछ आत्महत्या कर लेते हैं। पता नहीं, तुम क्या करने वाले हो?" "सुन लो बारी, उनमें से किसी की नौबत नहीं आएगी। मेरे पचास वर्ष पूर्ण होने से बहुत पहले ही तुम सभी साम्राज्यवादी अपना-अपना बोरिया-बिस्तर लपेट कर हमारे देश से भाग जाओगे, और यहां हमारी आजादी का झण्डा लहराया जाएगा।" तो ऐसे थे हमारे पूर्वज आजादी के दीवाने।

-मोहनलाल मगो, दिल्ली

चतुर्थ पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि भारतेन्द्र आर्य एक तपोनिष्ठ योग साधक

डॉ. अशोक कुमार आर्य



भारतेन्द्र आर्य का जीवन योगमय था। वे आजीवन योग के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। उन्हें भौतिक सुख-सुविधा कभी रास नहीं आयीं, वरन् त्यागमयी जीवन के वे पक्षधर थे। श्री भारतेन्द्र ने देश तथा विदेश में प्राणसाधना व योग का संदेश प्रसारित किया। वर्ष 2011 में योगाचार्य श्री आर्य का चीन में बलिदान हो गया था। वे योग के प्रचार-प्रसार हेतु एक माह के प्रवास पर चीन गये थे। उनका शव चीन से विशेष विमान द्वारा 2 अक्टूबर को दिल्ली पहुंचा था तथा अमरोहा में पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया था।

01 जनवरी 1975 में उत्तर प्रदेश के नगर अमरोहा में श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य एवं श्रीमती सुशीला आर्या के कुल में जन्मे श्री भारतेन्द्र ने विज्ञान स्नातक होकर योग शिक्षा का अध्ययन एवं उसके व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया। इसी कारण उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ से योग विषयक डिप्लोमा प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने योग एवं फिटनेस और योग थिरेपी आदि में भी अध्ययन किया।

भारतेन्द्र विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। वे निरभिमानी, विद्वान तथा चरित्रवान थे। योग तथा प्राणायाम के प्रति उनके मन में गहन निष्ठा थी। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय तथा गुडगांव आदि में तो योग का प्रशिक्षण दिया ही, साथ ही चीन तथा हांगकांग में चार वर्षों तक योगकेन्द्र का संचालन किया। योगाचार्य श्री आर्य ने अनेक बड़े राजनीतिज्ञों, खिलाड़ियों, उद्योगपतियों से लेकर जनसाधारण तक को योग व प्राणायाम की सही पद्धति सिखलाई। उन्होंने अल्प आयु

(37) में ही काफी यश व ख्याति अर्जित कर ली थी। प्रधान जी के नाम से विख्यात उनके पिता श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य समाज के प्रति समर्पित हैं। माता सुशीला आर्या जो अब हमारे मध्य नहीं हैं, सहित बड़े भाई आर्येन्द्र कुमार आर्य, वेदेन्द्र आर्य, योगेन्द्र आर्य तथा पूरा परिवार आर्यसमाज में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

भारतेन्द्र आर्य की योग के प्रति गहन जिज्ञासा थी। वे योग द्वारा मानव मात्र को स्वास्थ्य लाभ कराना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने विभिन्न संस्थाओं, संगठनों एवं व्यक्तिगत रूप से भी योग सिखलाया। पाँच वर्षों तक नई दिल्ली विश्व विद्यालय एवं प्राइवेट केन्द्रों पर योग सिखाया। स्वदेश के साथ-साथ विदेशों में भी उन्होंने योग सिखाया। हांगकांग एवं चीन में चार वर्ष तक योग सिखलाया। गौरवर्ण, लगभग पौने छः फीट लम्बे, व्यक्तित्व के धनी श्री आर्य ने अपनी अल्प आयु (लगभग 37 वर्ष) में न केवल अपने परिवार, अपितु अमरोहा नगर का नाम भी देश-विदेश में रोशन किया। जीवन के अन्तिम दिनों में वे चीन के गुआंग चोह नगर में योग सिखा रहे थे। अचानक 17 सितम्बर 2011 को उनके निधन के दुःखद समाचार ने परिजनों, संबंधियों एवं इस्तिमित्रों पर मानो वज्रपात कर दिया। हार्दिक श्रद्धांजलि।

आर्यावर्त केसरी वर्गीकृत विज्ञापन कॉलम में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं- व्यवस्थापक

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र

वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेंडर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

मूल्य
६०/- किलो

रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित

शुद्ध हवन सामग्री

हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता - उपदेश विभाग

कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५६२२-२६३४१२

कृपया अपनी प्रतिक्रिया भेजें

सम्मानित पाठकों से अनुरोध है कि आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित समाचारों व आलेखों के विषय में समय-समय पर अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहें। धन्यवाद,

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट
मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ. प्र.) दूर.- 05922-262033,
चल.- 08273236003,
9412139333

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, हरिद्वार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार/ प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2016 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यतः उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2015 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें। देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)

मुद्रण/प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

इच्छुक महानुभाव/संस्थाएं प्रकाशन हेतु

तुरन्त सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं०

कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922-262033/

09758833783/ 08273236003)

साहित्य समीक्षा

वैदिक पर्व पद्धति- नववर्षेष्टि

पुस्तक में पर्व मीमांसा के अन्तर्गत पर्वशब्द, पर्वयज्ञ तथा पर्व पद्धति के वेदमंत्रों की संगति के साथ विशद व्याख्या है। पौराणिक युग में लिखित फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का कल्पित, निराधार और अविवेकपूर्णता का दुष्प्रभाव बताया है।

पुस्तक का नाम : वैदिक-पर्व-पद्धति नववर्षेष्टि

लेखक का नाम : उदयनाचार्य

चलभाष : 09440721958

प्रकाशक : वेदधर्म-प्रचार-समिति

निगमनीडम्-वेद गुरुकुलम्

महर्षि दयानन्द मार्ग

ग्रा0- पिडिचेड, मठ गज्वेल-502278

जिला- मेदक (तेलंगाना)

मूल्य : 75/- रुपये

पृष्ठ संख्या : 86

-समीक्षक : सुमित अग्रवाल



सरल यज्ञ विधि

इस पुस्तिका के द्वितीय संस्करण में पवित्र कर्म व रोग-नाशकारी अग्निहोत्र की विधि का वर्णन मंत्र, अर्थ सहित किया गया है। पुस्तक का मूल्य न्यून व कागज, छपाई तथा गुणवत्ता उत्तम होने से संग्रहणीय व पठनीय है।

पुस्तक का नाम : सरल यज्ञ विधि
(वैदिक अग्निहोत्र)

सम्पादक व लेखक : स्वामी ब्रह्मानन्द

सरस्वती, आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली-

243003 (उ0प्र0), चलभाष : 09412372179, 09759527485

सहयोग राशि : 15/- रुपये, पृष्ठ संख्या : 76

-समीक्षक : सुमित अग्रवाल



वेद में क्या और कहाँ

वेद में क्या और कहाँ पुस्तक आचार्य वेदपाल वर्मा शास्त्री द्वारा लिखित है। इसके द्वारा जनसामान्य भी वेद विद्या को सरलता से समझ सकता है। इस पुस्तक में वेद के प्रति आकर्षण और रुचि भी पैदा हो जाती है। इस पुस्तक में चारों वेदों को एक सूत्र में पिरोकर उसका एक हिन्दी का इण्डेक्स तैयार किया गया है।

पुस्तक का नाम : वेद में क्या और कहाँ

लेखक : वेदपाल वर्मा शास्त्री

प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ।

मूल्य : 150/- रुपये

पृष्ठ संख्या : 182

लेखक का पता : मालदा बाग, पुरानी

गुड़ मण्डी, शाहपुर, जि0- मुजफ्फरनगर

(उ0प्र0)- 251318,

चलभाष : 09927575777

-समीक्षक : सुमित अग्रवाल



विशेष : विद्वान लेखकों/ प्रकाशकों तथा सम्पादकों से अनुरोध है कि इस स्तम्भ में नवीन कृतियों की समीक्षा प्रकाशनार्थ कृपया दो पुस्तकों अवश्य भेजें, ताकि समीक्षकों से समीक्षोपरान्त प्रकाशन सम्भव हो सके।
?क्षा भेजते समय समीक्षा के साथ-साथ एक प्रति अवलोकनार्थ भेजना आवश्यक है। धन्यवाद -सम्पादक

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.aryasmaj.com

अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com



राकेश आर्य

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है। शरीर को निरोग रखिए। इसकी शक्ति तथा सहन-सामर्थ्य बढ़ाए। जहां तक हो सके, इसे सुन्दर से सुन्दर बनाने का प्रयत्न कीजिए। अपने कमरे में एक रोशनदान खुला रखिए। कालिदास ने कहा है 'शरीर ही कर्तव्यपालन का सबसे प्रधान साधन है।'

यदि हम सुन्दरता का वरदान पाकर उत्पन्न नहीं हुए, तो भी हम अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर रोगों से दूर रखकर शान्त मस्तिष्क द्वारा आकर्षक बना सकते हैं। सौन्दर्य केवल त्वचा तक ही सीमित नहीं होता, इसकी गहराई आत्मा तक होती है। उत्तम स्वास्थ्य के बिना जीवन एक बोझ के समान है। जीवन में कष्टसाध्य तथा परिश्रमजन्य कार्यों

अपनी सामर्थ्य बढ़ाएं

के लिए हमको शारीरिक शक्ति तथा सहन-सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। हमें ऐसी अनुभूति होनी चाहिए, जिसे फ्रेंच लोग 'जीवन का हर्ष' कहते हैं। यह अनुभूति हमारे शरीर की प्रत्येक नस-नाड़ी और प्रत्येक अणु को होनी चाहिए। तब निराशा और चिन्ता का अंधकार हमारे शरीर तथा मन को परेशान नहीं करेगा। एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए आशावाद उतना ही आवश्यक है, जितनी

का प्रयास तो उन्हें करना चाहिए, जिन्हें शारीरिक प्रदर्शन की विद्या अपनानी हो, पहलवान या मुक्केबाज बनना हो। हमें सामान्य स्वास्थ्य, शक्ति, कुशलता तथा स्फूर्ति प्राप्त करनी है। हमें यह उचित अधिकार है कि हमें स्वास्थ्य का आनन्द प्राप्त करने की इच्छा रखें और दीर्घ आयु प्राप्त करने की कामना करें। शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान का अध्ययन करें, अपने शरीर के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कीजिए। हमें कुछ ऐसी पुस्तकें भी पढ़नी चाहिए, जो विशेषज्ञों द्वारा लिखित हों। अपने सामान्य सूझ-बूझ के द्वारा हमको उन्हें व्यवहार में उतारने का प्रयास करना चाहिए। स्वास्थ्य केवल एक उच्च लक्ष्य प्राप्ति का साधन है। हर समय सेहत बनाने के ध्यान में डूबे रहना ठीक नहीं। हमें उनका अनुकरण करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, जो हर समय कैलोरीज, विटामिन तथा टाक्सिन की ही रट लगा कर उबा देते हैं। अपने शरीर का उचित ध्यान रखिए किंतु उचित से अधिक नहीं।

मंत्री- आर्यसमाज,
विज्ञाननगर, कोटा, राजस्थान

स्वास्थ्य जगत

शवासोच्छवास क्रिया तथा निद्रा में सुखद निद्रा आनी चाहिए। अनिद्रा से निराशा का जन्म होता है, जो सफलता प्राप्ति में बाधक है। यदि हम अपने शरीर को स्वस्थ अवस्था में नहीं रखते, तो बीमारी में हमारा समय नष्ट होगा। समय कभी-कभी धन है, किंतु समय प्रत्येक काल में जीवन है। जीवन के लघुत्तम समय को भी बेकार में व्यतीत न होने देना चाहिए। हमें मांसपेशियों को असाधारण रूप से बलशाली बनाने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार

मनोविश्लेषण : क्यों जरूरी हैं सकारात्मक विचार?



मोहनलाल मगो

जैसे विचार होते हैं, वैसे ही आचार भी होते हैं। जैसी इच्छा होती है, वैसा ही फल भी मिलता है। उच्चातिउच्च दशा विचारों से प्राप्त होती है, और नीचातिनीच स्थिति भी विचारों से ही मिलती है।

सकारात्मक विचार करना आम का वृक्ष बोना है। आम का वृक्ष देर में, किंतु मधुर फल देता है। वह बोने वाले ही को मधुर फल और शीतल छाया नहीं देता, बल्कि उन सभी को देता है, जो उसके पास

जाते हैं। इसी तरह सद्विचारों का फल भी देर में पर मधुर फल मिलता है। सद्विचार कर्ता को ही शान्ति और सुख नहीं देते, बल्कि उन सभी को देते हैं, जो उनके सम्पर्क में आते हैं।

नकारात्मक विचार जंगली झाड़ी के समान हैं। झाड़ी उसके बोने वाले को ही कांटे नहीं चुभोती, बल्कि उन सबको चुभोती है, जो जाने या अनजाने में उसके पास जाते हैं। इसी तरह नकारात्मक विचार उनके कर्ता को ही दुख और संकट में नहीं डालते, बल्कि उन सबको भी डालते हैं, जो उनके संपर्क में आते हैं।

सकारात्मक विचार गरुड़ के समान वेगवान और शक्तिशाली होते हैं। उन पर सवार होकर मनुष्य सभी उत्तम पदार्थ पा सकता है। जीवन को शुद्ध और पवित्र बना सकता है। मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य की

उपासना का सकारात्मक विचार फल है। दुखियों के दुख हर उन्हें दुखमुक्त करना सद्विचार फल है। अपने से अधिक दुखी को देखकर अपना दुख भुलाना सकारात्मक विचार है। अनाचारी को भी दयापूर्वक सदाचारी बनाने के प्रयत्न में अपना सर्वस्व लगा देना और उसे सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करना सकारात्मक विचार है। जिसको सकारात्मक विचार फल प्राप्ति हुई है, उसके लिए समझना चाहिए कि वह प्रभु का परम भक्त है, और उसकी संगति में रहकर कल्याण करने के विचार परम सुखदायी हैं, मंगलकर्ता हैं और अपने दूसरे सबके लिए हितकारी हैं। आओ सबके मंगल की कामना हर पल करें, ताकि हमारा अपना मंगल पल-पल होता रहे।

-पी ६५, पाण्डवनगर,
दिल्ली

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/-
तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी
गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

वधू चाहिए

मेरे पुत्र नितिन सरीन, उम्र 28 वर्ष (जन्मतिथि 15-5-1987), लम्बाई 5'10" इंडिया प्रा0लि0 में नेटवर्किंग इंजीनियर, पैकेज तीन लाख रुपये वार्षिक, व्यसन रहित, शाकाहारी, (माता-पिता हायर सेकेंडरी स्कूल, नवादा में प्रवक्ता) हेतु सुन्दर, सुशील, सुयोग्य, गृहकार्य में दक्ष आर्य विचारधारा वाली वधू चाहिए।
-वीरेन्द्र सिंह
मोबा.: 09814486808

अथर्व रसरंग

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

मंत्र- एषा सनत्नी सनमेव जातैषा पुराणी परि सर्वं बभूव। मही देव्युषसो विभाती सैकैनेकेन मिषता विचष्टे॥१०.८.३०॥

गीत

(एक व्रजलोक गीत की धुन)
धन्य है तू प्रभुवर की शक्ति,
हितैषी बहुत हमारी है।
हितैषी बहुत हमारी है,
बहुत ही हमको प्यारी है॥
धन्य है.....

तू प्रभु की शक्ति! रहत जागे,
सदा ही भक्तों को आगे-
बढ़ाने वाली नेमी प्रसिद्ध,
सफलता तेरी आभारी है।
धन्य है.....

तुझ पुरा शक्ति का डेरा,
जिसने सारे जग को घेरा,
प्रकाशित उषाकाल जिससे,
जिससे होती उजियारी है।
धन्य है.....

एक एक झपक पलक की ले,
देख दुःख, तू उसको लीले;
सकल जग की सुध रखती तू,
अज्ञता तुझसे हारी है।
धन्य है.....

८-वसन्त कुंज, ३६९/१,
वसन्त विहार
फेज-१, देहरादून
मोबा० : ९४१२६३५६९३

कुर्सी

ओमवती देवी

आज हर तरफ देखो कुर्सी का जोर है
गली और मौहल्लों में कुर्सी का शोर है
चाहा है कुर्सी को किसने मगर बैठा और है
नहीं है रुकावट कोई नहीं कोई ठौर है।
चारों तरफ मचा देखो कुर्सी का शोर है।
चारों तरफ.....

पराया है कोई नहीं, नहीं कोई अपना
कुर्सी बनी है देखो, हर किसी का सपना
अच्छाइयों को छोड़कर बुराइयों को जोड़कर
पड़ जाये धन चाहे कितना ही खर्च करना
नहीं छीन पाये कोई कुर्सी को और है
चारों तरफ.....

अत्याचार कितने ये कुर्सी कराती है
कितने भ्रष्टाचारों में ये कुर्सी फंसाती है
जो बनते भोले-भाले पहले जीत बाद मालिक हैं
हुकूमत है उनकी और उनका कानून है
लाठी है जिसकी देखो भैंस उसकी ओर है।
चारों तरफ

परिवार संघ राज्य या देश हो
कुर्सी है पास जिसके वह ही गनेश है
माता, बहन, बहू, बेटियों की होती बेआबरू मौत है
घिनौने कार्यों पर न होती कोई पक्की रोक है
चारों तरफ मचा देखो कुर्सी का शोर है।

-सब्दलपुर शर्की,
सैद नगली, जिला- अमरोहा

काव्य जगत

सावधान हो जाओ जवानों

विशनलाल वर्मा, जमना खास, अमरोहा

सावधान हो जाओ जवानो
अपनी शक्ति को पहचानो
परिवर्तन के अग्रदूत हो
जागो अब मजदूर किसानो॥

हाथ फिलाकर मत लो भत्ता
तुम तो शक्तिशाली हो
अपंग बनकर क्यों जीते हो
तुम तो भाग्यशाली हो॥

अशफाक उल्ला और भगतसिंह
तुमको ही तो बनना है
आजादी अब बूढ़ी हो गयी
नवजीवन फिर से भरना है॥

क्यों भीख मांगते खड़े-खड़े
क्यों स्वयं पर है विश्वास नहीं
जो भीख बांटते हैं तुमको
कोई शक्ति उनके पास नहीं॥

जो पैसा तुमको देते हैं
वह उनकी नहीं बपौती है
वह उनकी नहीं कमाई है
वह देश की लूटी संपत्ति है॥

निज खून को अब तुम गर्म करो
बिस्मिल और आजाद बनो
निज देश धर्म पहचानो तुम
फिर परमानन्द सुभाष बनो॥

जो भीख की रोटी खाते हैं
मनोबल उनके मर जाते हैं
आत्म बल जिसमें होता है
पग पीछे नहीं हटाते हैं॥

हो ऋषियों की सन्तान तुम्हीं
वीरों के वंशज हो तुम
अर्जुन, भीम बनो, महाभारत के
मत बनो नपुंसक कायर तुम॥

छीनो निज अधिकारों को
कर्तव्यों को पहचानो तुम
जो सिंहखाल ओढ़े बैठे हैं
उन सियारों को पहचानो तुम॥

खो गया चरित्र जो भारत का
वह फिर से तुमको लाना है
हो गया भ्रष्ट अब शासक दल
अब भ्रष्टाचार मिटाना है॥

सत्ता के भूखे सियार लोमड़ी
प्रलोभन तुमको बांट रहे
कुछ प्रलोभन देते सत्ता का
कोई बेकरी भत्ता बांट रहे॥

कोई दारू दे कोई पैसा दे
बस केवल कुर्सी पाने को
तत्पर हैं सब सत्ताधारी
भारत सम्मान मिटाने को।

झूठ मूठ सब भाषण देते
लोकतंत्र का देते नारा
बेटी बेटे- नाती पोते
सत्ता में परिवार है सारा॥

उन वीरों को सब भूल गये
जो आजादी के बलिदानी हैं
फिर से लिखनी आज तुम्हें
उनकी नई कहानी है॥

मीठा-मीठा बोल

मनोहर सोनी

मीठा-मीठा बोल, मीठा-मीठा बोल।
दुनियां में फिर, चाहे जहां डोल॥

देखना बुरा, सुनना बुरा,
सोचना बुरा, करना बुरा।

समरस घोल-समरस घोल॥
दुनियां में फिर, चाहे जहां डोल।

मीठा-मीठा बोल, मीठा-मीठा बोल॥
प्यासे को पानी, भूखे को धानी,

कुछ भी नहीं, देने में हानि।
हृदय तराजु तोल, हीये तराजू तोल॥

दुनियां में फिर, चाहे जहां डोल।
मीठा-मीठा बोल, मीठा-मीठा बोल॥

जो करेगा भला, तो मिलेगा भला,
“मनोहर” यही, जीने की कला।

है मानव तन अनमोल-मानव तन अनमोल॥
दुनियां में फिर, चाहे जहां डोल।

मीठा-मीठा बोल, मीठा-मीठा बोल॥
मु.पो. कडैल-३०५०२१,

जिला-अजमेर (राज.), ०९६७२०२०४४९

रचनाकार कृपया ध्यान दें!

यदि आप अपना काव्य संग्रह या संकलन मुद्रित एवं प्रकाशित कराना चाहते हैं, तो आर्यावर्त प्रकाशन से सम्पर्क करें। पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०), मोबा. : 9412139333

कैसे करें अन्तिम संस्कार

(१ सितम्बर २०१५ का शेष)



डॉ० स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती

४- नरभक्षी अफ्रीका आदि प्रदेश में मानवभक्षी जातियां व समुदाय हैं, जो अभी भी यदा-कदा (अंग्रेजों में भी) मानवभक्षी लोग हैं, जैसे भारत में अघाड़ीपन्थी हैं। वे जलती चिता में से भी लाश निकाल कर मदिरा पान कर मांसभक्षण करते हैं।

वैदिक विधि : जिसने भी जन्म लिया है, उसकी मृत्यु अटल व अनिवार्य प्राकृतिक नियम है। वेद, मनुस्मृति उदलक संहिता व सोलह संस्कार विधि के अनुसार अग्निदेहा संस्कार सर्वोत्तम शुद्ध है, क्योंकि यह मानव या जीव पांच तत्वों का पुतला है, और शरीर भस्मान्त के साथ पांच तत्वों में मिल जाता है।

संक्षिप्त विधि : जब कोई मर जावे, तब यदि पुरुष हो, तो पुरुष और स्त्री हो, तो स्त्रियां उसे स्नान करावें, चन्दनादि सुगन्धित लेप और नवीन वस्त्र पहनावें। यदि संभव हो तो शरीर के बराबर भ (गरत) बराबर शुद्ध समाग्री, कुछ चन्दन, केसर, अम्बर, कपूर, अगर घरत, कस्तूरी आदि मिश्रण कर, श्मशान ले जावें। हो सके तो नई वैदी पहनावें वरना पुरानी भी वेदी पर गोमूत्र व जल का छिड़काव करावें। फिर वेदी पर लकड़ियां सामर्थ्य व समयानुसार जमावें। कुछ बड़ी लकड़ियां शव के ऊपर रखावें। मृतक के पांच दक्षिण नैऋत्य अथवा आग्नेय कोण में रहें। सिर उत्तर (इशान या वायव्य) दिशा में रखें। कहीं-कहीं कुछ असुर प्रवृत्ति व शूद्र विधि मृतक का सिर दक्षिण में व पांच उत्तर में रखते हैं, जो वेदविरुद्ध संस्कार है। शव को चिता पर सीधा लिटावें, ताकि अन्तिम दर्शन, चरणस्पर्श कर सकें। शव के ऊपर भारी व मोटी लकड़ियां जमावें, क्योंकि कभी हलकी लकड़ियों के कारण शव को जलाने पर नशें सिकुड़ती हैं, और शव में हलचल व अकड़न के कारण खड़ा हो सकता है, और लोग भयभीत हो सकते हैं। कहीं-कहीं या कुछ सम्प्रदाय शव

को चिता पर उलटा लिटाते हैं, तो संस्कार विरुद्ध है।

शव को अग्नि देने से पहले किसी वैदिक विद्वान से संस्कार विधि के अनुसार अनुष्ठान या यज्ञ करावें। अगर सामर्थ्य व विधि-विधान की उपलब्धता न हो तो संस्कार विधि के कुल १३६ मंत्र पढ़ें। अगर यह संभव न हो तो ईश्वर स्तुति के ८ मंत्र पढ़ें या यह भी संभव न हो, तो पांच बार गायत्री मंत्र जप सभी करें।

फिर ज्येष्ठ पुत्र या जो भी पारिवारिक सदस्य उपस्थित हो, उसके हाथ में अग्निभुजा दें। पहले पांव में चरण स्पर्श कर ओम अग्नेय स्वाहा कहकर चिता अग्नि देवें। फिर जैसा भी संभव हो, अर्थी के साथ आये परिजन, मित्र आदि भी अग्नि में आहुति व सामग्री व समिधा रखें।

शव के आधे से ऊपर जलने के बाद जो भी उत्तराधिकारी या परिवार का सदस्य कपाल भस्ती करे (इसमें एक लम्बी लकड़ी में लोटा बांधकर घी भरकर कपाल पर डाले या फोड़े) कपाल भस्ती करें। प्रस्थान करें।

शव के पूर्ण जलने के पश्चात् अपने समाज के रीति-रिवाज के अनुसार तिये पर शव के फूल (हड्डियां) इकट्ठी करें, तथा गंगा में या अपने स्थल पर जल प्रवाह करें। अगर हो सके, तो किसी बाग या स्मृति वन में गड्ढा खोदकर फूल डालें तथा मृतक की स्मृति में एक पेड़ लगाकर उन्हें अमर करें। तथा राख (भस्म) को किसी खेत में बिखेर दें, ताकि उसके अणु-परमाणु प्रसारित होते रहें। अगर हो सके, तो मृतक की स्मृति में बेवजह धन खर्च करने की जगह पाठशाला, दवाखाना या गरीब बच्चों की फीस, कपड़े दें। धर्म-लाभ पुण्य प्राप्त करें। मृतक के पीछे जो क्रियाकर्म, मृत्यु भोज व गरुड़ पुराण आदि व्यर्थ हैं।

विशेष : आजकल विदेशों में अमरीका, कनाडा, इंग्लैण्ड, जापान आदि देशों में भी भारतीय संस्कृति को अपनाते हुए विद्युत दाहगृह बनाये जा रहे हैं, जहां कुछ ही समय में शव भस्म हो जाता है, तथा उसकी कुल हड्डियों को ४ गुणा ६ इंच का कुछ बड़े डब्बे में लेकर कब्रिस्तान में गाड़ देते हैं, तथा भस्म को खेतों-बागों में बिखेर देते हैं। विधि उत्तम व प्रेरणादायक है।

-नमन आश्रम, पिण्डव

सत्यार्थ प्रकाश के विषय में महान क्रान्तिकारी विनायक दामोदर सावरकर के विचार

“हिन्दी जाति की ठण्डी रगों में ऊष्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) अमर रहे, यही मेरी कामना है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं बघार सकता।”

हमेशा याद रहेंगे कर्मयोगी स्वामी सुमेधानन्द

महात्मा चैतन्य मुनि

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के निधन से आर्य जगत में जो स्थान रिक्त हुआ है, उसका भर पाना असंभव सा ही लगता है। स्वामी जी का जन्म 5 मई 1937 में हुआ था, तथा 5 अगस्त 2015 को उन्होंने इस नश्वर देह का त्याग कर दिया। हमारा उनके साथ बहुत ही समीप का संबंध रहा है। बल्कि यदि कहें कि हमारे लिए वे किसी परिवार के सदस्य जैसे थे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने हमें अपने जीवन की पूरी कहानी अनेक बार सुनाई कि किस प्रकार उनके मन में वैराग्य के भव पैदा हुए, और यह गोपाल नामक युवा कहां-कहां, कैसे-कैसे अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अन्ततः दयानन्द मठ, दीनानगर में पहुंचा और वहां वे क्या-क्या काय करते थे.... आदि। सन् 1970 में अपने जीवन के 33वें वर्ष में महर्षि बलिदान दिवस पर उन्होंने स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास लिया और उनकी इच्छा पूरी करने के लिए चम्बा के उस एकान्त तथा ऊबड़-खाबड़ स्थान पर पहुंचे, जहां आज दयानन्द मठ चम्बा स्थित है। उन्होंने तथा आचार्य महावीर जी ने बहुत ही कठोर परिश्रम करके उस स्थान को समृद्धि प्रदान की है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा में सबसे अधिक समय तक

महामंत्री के रूप में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आर्यवन्दना के सम्पादन से भी मैं लगभग 26 वर्ष तक जुड़ा रहा। इस दौरान अनेक प्रधानों के साथ कार्य करने का अवसर मिला, तथा सभी का अपने अपने ढंग से सभा को सहयोग रहा। मगर स्वामी जी के साथ मुझे सबसे अधिक समय कार्य करने के लिए मिला है। इनमें कार्य करने की अद्भुत क्षमता



ही नहीं थी, बल्कि संगठन को किस प्रकार से मजबूत किया जा सकता है, यह कला भी उनके पास विद्यमान थी। वे अपने अन्तिम समय तक अत्यधिक आशावादी दिखते थे, भले ही उन योजनाओं को वे किन्हीं कारणों से कार्यान्वित न कर पाये हों, मगर उनके पास एक गम्भीर विजन था। जब उनकी अत्यधिक अस्वस्थता का पता चला, तो मैं व सत्यप्रिया यति जी एक मई को उनसे मिलने चम्बा पहुंचे। उस समय भी उनमें वही उमंग दिखाई दी थी।

हम देर रात तक अपने संस्मरणों को दोहराते रहे थे..... भले ही वे सतर्मान सभाओं के स्तर व संगठनादि को लेकर अन्य विशुद्ध ऋषिभक्तों की तरह बहुत चिन्तित थे, मगर फिर भी बहुत आशान्वित भी थे कि कभी न कभी पुनः हमारा संगठन मजबूत होगा, जब असली दयानन्दियों के हाथ में बागडोर आएगी.....। और भी उन्होंने उस दिन बहुत-सी बातें कही थीं।...

6 अगस्त को प्रातःकाल जब महावीर जी का फोन आया, कि स्वामी जी अब इस दुनिया में नहीं रहे.... वे अधिकतम हमारे यहीं ठहरते थे, तथा उनके साथ इतने अधिक संस्मरण हैं कि यहां दे पाना असंभव सा ही है। हां अपनी आत्मकथा में कुछ संस्मरणों को देने का प्रयास करूंगा। चम्बा से 8 अगस्त को आयोजित उनकी श्रद्धांजलि सभा में बोलने के लिए खड़ा हुआ, तो उनके साथ बिताया समय एकदम आंखों के सामने उभर आया। स्वामी जी ने न केवल हिमाचल प्रदेश सभा के लिए, बल्कि समूचे आर्यजगत के लिए बहुत कार्य किया है, जिसके लिए उन्हें सदा ही स्मरण किया जाता रहेगा। आवश्यकता इस बात की है कि पुरानी पीढ़ी के आर्यों की तरह अपने स्वार्थों एवं ऐषणाओं से ऊपर उठकर मन, वचन व कर्म से अपने मिशन के लिए कार्य करें। उन्हें यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबिल ट्रस्ट, नागपुर

आर्य जगत के सर्वोच्च पुरस्कारों के लिए जीवनदानियों, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों से आवेदन पत्र आमंत्रित

१. आर्य रत्न पुरस्कार सू. सं. १९६०८५३११३.१४.१५.१६ के लिये पुरस्कार संख्या 4 प्रत्येक एक लाख रूपया 100,00.00 चार विद्वान जीवन दानियों से आवेदन पत्र आमंत्रित है, जिनका पूरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाज सेवा, योग, शिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्य प्राच्याविद्या, के प्रसार व प्रचार में नैष्ठिक जीवन के साथ निस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है।

२. आर्य विभूषण पुरस्कार सू. सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 51000.00 रूपया इक्यावन हजार रूपयों का, उन विद्वानों को दिया जाएगा, जिनका पूरा जीवन वेद-प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन, व समाज सेवा में लगा हो।

३. आर्य गौरव पुरस्कार सू. सं. १९६०८५३११४.१५.१६ के लिए पुरस्कार संख्या 3 प्रत्येक पुरस्कार 21000.00 इक्कीस हजार रूपयों का, यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों प्रचारकों को दिया जायेगा जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहा है।

4. आवेदन पत्र स्वयं या विद्वान के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति द्वारा भी दिया जा सकता है प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ विद्वान के निकटतम जीवन से परिचित व्यक्ति का अनुमोदन भी साथ आना आवश्यक है।

सभी प्रस्ताव अनुमोदन के साथ ट्रस्ट के नीचे लिखे पते पर चयन-समिति के पास पहुंच जाने चाहिए। बाद में आये प्रस्तावों पर बिचार नहीं होगा। पुरस्कारों के लिए आये आवेदन पत्रों पर चयन-समिति का निर्णय ही अन्तिम तथा मान्य होगा।

राव हरिश्चन्द्र आर्य
मैनेजिंग ट्रस्टी

पुरस्कार चयन-समिति
राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट
३८७ आर्यादय रुईकर मार्ग महल
नागपुर, ४४००३२ (महाराष्ट्र) मोबा.: 09422112001

ऋग्वेद

॥ ओ३म् ॥

यजुर्वेद

‘सत्यार्थ प्रकाश’

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र ‘सत्यार्थ प्रकाश’ व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती है। धन्यवाद

॥ योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ॥

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियाँ में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियाँ इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभावों को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियाँ, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियाँ भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. ‘सत्यार्थप्रकाश’ के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. ‘सत्यार्थप्रकाश’ की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य ‘सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि’, आर्यावर्त प्रकाशन, सीम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

टंकारा। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के मंत्री रामनाथ सहगल ने कहा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा में 6 से 8 मार्च 2016 तक शिवरात्रि के पावन पर्व पर परम्परागत ढंग से ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

टंकारा पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था गतवर्षों की भांति ट्रस्ट की ओर की जाएगी।

इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में भी आर्यों का विशाल जत्था 02 मार्च 2016 को अमरोहा व मुरादाबाद से टंकारा खाना होगा। इस अवसर पर अहमदाबाद, पोरबन्दर, सोमनाथपुरी, द्वारिका, भेंट द्वारिका स्थित ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों का भ्रमण कराया जायेगा। कार्यक्रम के संयोजक व संपादक डॉ. अशोक कुमार आर्य के अनुसार यात्रा हेतु आरक्षण प्रारम्भ हो गये हैं।

एक रूप यज्ञ कार्यशाला सम्पन्न

दिल्ली। आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज कीर्तिनगर के सहयोग से एक रूप यज्ञ कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 65 धर्म प्रेमी आर्य जनों ने अपने-अपने यज्ञ कुंडों में यज्ञ किया। कार्यक्रम में महाशय धर्मपाल एम डी एच की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने कहा कि यज्ञ को घर-घर तथा व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचाना बहुत आवश्यक है और इस कार्य को इसी प्रकार की कार्यशालाओं द्वारा किया जाना संभव है। उन्होंने उन सभी महानुभावों को बधाई दी जिन्होंने इस कार्यशाला में भाग लिया है। उन्होंने आशा व्यक्त की, कि सभा इसे विद्यालयों के बच्चों एवं गुरुकुलों में भी आरंभ



यज्ञ कार्यशाला में प्रशिक्षण देते आचार्यगण- केसरी

कराएगी। उन्होंने सहयोगी महानुभावों को सम्मान एवं अपना आशीर्वाद दिया। सभा प्रधान धर्मपाल आर्य ने कहा कि निश्चित रूप से हम इस कार्यक्रम को शीघ्र ही अपने विद्यार्थी वर्ग तक एवं यज्ञ का प्रशिक्षण दिया।

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2016 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

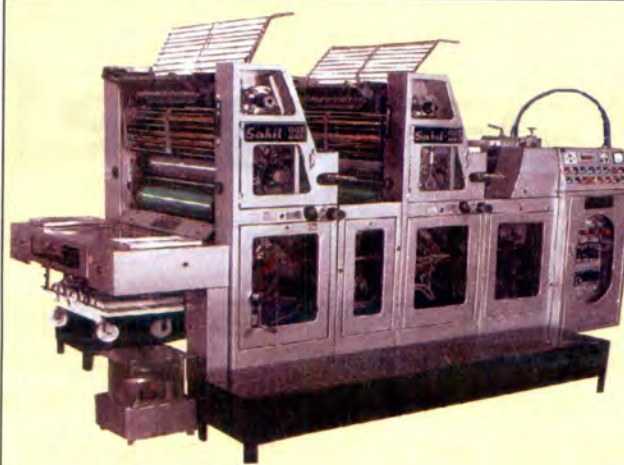
1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यतः उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2015 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें। देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)



भरपूर ताकत के लिए सदा प्रयोग करें मुगल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है, या डाक द्वारा मंगाएं।

निल स्पर्म रोगी व बेऔलाद अवश्य मिलें
हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)
मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317



आर्यावर्त प्रिंटरर्स

रूपये **225** में

1000
कलर्ड विजिटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिजाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रेक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोस्पेक्टस, कॉलेज मैग्जीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटरर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक

श्रीराम गुप्ता

प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, अमित कुमार,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक,
मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस
के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से
मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा

उ.प्र. (भारत) -२४४२२९

से प्रकाशित एवम् प्रसारित।

☎: 05922-262033,

9412139333 फ़ैक्स : 262665

डॉ. अशोक कुमार आर्य

प्रधान सम्पादक

E-mail :

aryawart_kesari@rediffmail.com

aryawartkesari@gmail.com